Date 03/08/2020 Page No.

विषय- संस्कृत, बी. ए. स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र डॉ. ओम प्रकाश आर्य
कादम्बरी - शुकनासोपदेश महाराजा कॉलेज, आरा
गद्यांश व्याख्या दिनांक -

आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्। इयं हि सुभट खड्ग मण्डलोत्पल वन विभ्रम भ्रमरी लक्ष्मीः क्षीरसागरात् - पारिजातपल्लवेभ्यो रागम्, इन्दुशकलादेकान्तवक्रताम्, उच्चैःश्रवसश्चञ्चलताम्, कालकूटान्मोहनशक्तिम्, मदिराया मदम्, कौस्तुभमणेरति नैष्ठुर्यम् इत्येतानि सहवास परिचयवशाद्विरह विनोद चिह्नानि गृहीत्वैवोद्‌गता।

सान्वयव्याख्या :- (आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्) मंगल के अभिलाषी आप पहले लक्ष्मी को ही देखें। (इयं हि ~~लक्ष्मी~~ सुभटखड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी लक्ष्मीः) यह श्रेष्ठ योद्धाओं की तलवारों रूपी कमलवन में भ्रमण करनेवाली भ्रमरी रूपा लक्ष्मी ~~एक~~ (सहवासपरिचयवशाद्विरह विनोद चिह्नानि) एक साथ रहने से परिचय बढ़ जाने के कारण वियोग के समय में मनोविनोद के चिह्न के रूप में (पारिजातपल्लवेभ्यो ~~राम~~ रागम्) पारिजात के पत्तों से राग (आसक्ति), (इन्दुशकलादेकान्त वक्रताम्) चन्द्रकला से निपट वक्रता, (उच्चैःश्रवसश्चञ्चलताम्) उच्चैःश्रवा से अस्थिरता, (कालकूटान्मोहनशक्तिम्) कालकूट या हलाहल से सम्मोहन शक्ति, (मदिराया मदम्) मदिरा से मादकता और (कौस्तुभमणेरति

Scanned with CamScanner

नैष्ठुर्यम्) कौस्तुभ मणि से क्रूरता को (गृहीत्वैव) लेकर ही (क्षीरसागरात् उद्गता) क्षीरसागर से मानो बाहर निकली है।

भावार्थ- हे चन्द्रापीड! कल्याणाभिलाषी तुम स्वयं सबसे पहले इस लक्ष्मी के वास्तविक रूप का विचार करके देखो। निश्चय ही यह लक्ष्मी भंवरी ही है जो हमेशा कुशल योद्धाओं के तलवार समूह के कमल वन में भ्रमणशील रहती है। जब क्षीर सागर इसका जन्म हुआ था तो वहाँ के साथियों के विरह में अपना मन बहलाने के लिए उनकी कुछ न कुछ निशानी साथ लेकर बाहर आई। पारिजात के पत्तों में राग (लाली) रहता है सो उनसे यह राग (आसक्ति की लाली) ले आई है। पारिजात के पत्तों का राग अस्थिर रहता है तो इस लक्ष्मी का अनुराग भी किसी के प्रति दृढ़ नहीं है। प्रियसखी चन्द्रकला के सहवास की स्मृति को अमिट बनाने के लिए उसकी 'वक्रता' को ही इसने ले लिया, इसलिए इसमें कुटिलता दिखाई देती है। इसी प्रकार उच्चैःश्रवा से उसकी प्रिय वस्तु 'चंचलता' लेकर आई है अतः कहीं भी अधिक देर टिक कर नहीं रह सकती। कालकूट नामक विष से उसके प्रधान गुण मोहन शक्ति (मूर्च्छा उत्पन्न करने की शक्ति) को इसने अपना लिया है, अतः सभी को मोहित कर अपने पंजे में किये रहती है। मदिरा से इसने 'मद' को ले लिया है इसलिए

सदा उद्धत बनी रहती है। कौसुभमणि की अति कठोरता को इसने धारण कर लिया है, अतः बहुत निर्दय है। इसप्रकार उन-उन पदार्थों के उन उन गुणों को लेकर ही इस लक्ष्मी ने इस लोक में पदार्पण किया है, इसलिए आसक्ति आदि दुर्गुण इसके स्वभाव में पूर्णतः घुलमिल गये हैं।

टिप्पणी - आलोकयतु - आ + लोक् + लोट् प्र० पु० ए०।

कल्याणाभिनिवेशी - कल्याणे अभिनिवेशो यस्य सः (बहु०), अभिनिवेशी - अभि + नि + विश् + णिनि (ताच्छील्ये णिनिः)। सुभटखड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी - शोभनाश्च ते भटाः सुभटाः (कर्मधा०) खड्गानां मण्डलं खड्गमण्डलम् (ष० तत्पु०), सुभटानां खड्गमण्डलं सुभटखड्गमण्डलम् (ष० तत्पु०), उत्पलानां वनम् उत्पलवनम् (ष० तत्पु०), सुभटखड्गमण्डलम् एव उत्पलवनम् सुभटखड्गमण्डलोत्पलवनम् (क० धा०) ०वने विभ्रमो (भ्रमणम्) यस्याः सा चासौ भ्रमरी (क० धा०) बि० (स्त्री०)। सहवासपरिचयवशात् - सह वसनं सहवासः (सह + वस् + घञ्) सहवासात् परिचयः (पं० तत्पु०) सहवासपरिचयस्य वशात् (ष० तत्पु०)

(विरहविनोदचिह्नानि) - विनोदाय चिह्नानि विनोदचिह्नानि (चतुर्थी तत्पु०), विरहे विनोदचिह्नानि (स० तत्पु०)।

गृहीत्वा - ग्रह् + क्त्वा।

उद्गता - उद् + गम् + क्त + टाप्।